Explore–Journal of Research
Peer Reviewed Journal
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
https://www.patnawomenscollege.in/journal

हिंदी में एकरूपता की समस्या

• दीपा श्रीवास्तव • मौसम कुमारी • श्रुति श्रेया • श्रेया वात्स्यायन

Received : December, 2023
Accepted : January, 2024
Corresponding Author : दीपा श्रीवास्तव

सारांश : *हिंदी का क्षेत्र जितना व्यापक है, उसका स्वरूप उतना ही वैविध्यपूर्ण है। इस विविधता के अनेक कारणों में प्रमुख हैं– क्षेत्रीयता का प्रभाव और सोशल मीडिया तथा दैनिक व्यवहार में हिंग्लिश का प्रयोग। इस विविधता ने एकरूपता की समस्या को जन्म दिया, जो हिंदी के एक आदर्श, परिनिष्ठित और मान्य रूप के लिए शुभ संकेत नहीं है।*

शब्द, वाक्य, वर्तनी और उच्चारण–इन सभी में एकरुपता के अभाव से भाषा अशुद्ध और विकृत हो जाती है, जिससे भाषायी अराजकता का प्रसार होता है। एकरूपता की यह समस्या मुख्यतः 'न' और 'ण', 'श', 'ष' और 'स', 'र', 'छ' और 'क्ष', 'इ' और 'ई' आदि के प्रयोगों में दिखाई देती है।

हिंदी की यह अनेकरूपता इसे राजभाषा के रूप में स्थापित करने में सबसे बड़ी बाधक बनी। इसने अन्य अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। इन समस्याओं के निवारण हेतु मानक भाषा अर्थात् हिंदी के मानकीकरण की आवश्यकता पड़ी। मानकीकरण से तात्पर्य है भाषा की इकाइयों में उपलब्ध विकल्पों में से एक विकल्प को स्वीकृत कर अन्य विकल्पों को अमानक माना जाए। इस तरह मानकीकरण भाषा को एकरूपता और सरलता प्रदान करता है। इस संबंध में केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने वर्णमाला और वर्तनी के मानकीकरण के लिए अनेक नियम निर्धारित किए हैं।

वर्तनी में एकरूपता लाने हेतु भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 1961 में एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की थी। समिति ने अप्रैल 1962 में अपनी अंतिम सिफारिशें प्रस्तुत कीं, जिन्हें सरकार ने स्वीकृत किया। इन्हें 1967 में 'हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक पुस्तिका में व्याख्या तथा उदाहरण सहित प्रकाशित किया गया था ।

किसी भाषा में एकरूपता की समस्या भाषा को विकृत बनाती है, तो भाषा का मानक रूप उसे एकरूपता प्रदान कर सार्थक बनाता है।

बीज शब्द : *हिंदी, एकरूपता, समस्या, मानकीकरण ।*

दीपा श्रीवास्तव
Assistant Professor, Department of Hindi,
Patna Women's College (Autonomous),
Bailey Road, Patna–800 001, Bihar, India
E-mail: deepa.hindi@patnawomenscollege.in

मौसम कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2021-2024,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

श्रुति श्रेया
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2021-2024,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

श्रेया वात्स्यायन
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2021-2024,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

भूमिका :

"यह संपूर्ण भुवन अंधकारमय हो जाता, यदि संसार में शब्द स्वरूप ज्योति अर्थात् भाषा का प्रकाश न होता।"

(आचार्य दंडी, काव्यादर्श)

किसी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अस्मिता का प्रतीक भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण का भी महत्वपूर्ण तत्व है। इसके उच्चरित रूपों में ध्वनियों का और लिखित रूपों में लिपियों का प्रयोग होता है।

हिंदी आज तमाम बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए वैश्विक भाषा बन गई है। विस्तृत भू-भाग से लेकर जनसंचार के लगभग सभी माध्यमों में प्रयुक्त इस भाषा का